।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पूर्ण जीवन

स्वस्ति नो दिवो अग्ने पृथिव्या विश्वायुर्धेहि यजथाय देव।
सचेमहि तव दस्म प्रकेतैरुरुष्या ण उरुभिर्देव शंसैः॥
ऋग्वेद 10/7/1

भावार्थः

हमारा मस्तिष्क व शरीर स्वस्थ हो. पूर्ण जीवन वाले होकर हम यज्ञशील बनें. प्रभु के ज्ञान को प्राप्त करें. उदार बनें.

वर्ष 36, अंक 16 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 फरवरी, 2013 से 3 मार्च, 2013
विक्रमी सम्वत् 2069 दयानन्दाब्द : 188
सृष्टि सम्वत् 1960853113 वार्षिक : 250 रुपये
फैक्स : 23365959 ई–मेल : aryasabha@yahoo.com
Website:www.thearyasamaj.org पृष्ठ 1 से 8 तक

संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार के तत्वावधान में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर

2 दिवसीय राष्ट्रीय संस्कृत विद्वत संगोष्ठी

उद्घाटनः – 5 मार्च, प्रातः 10 बजे

तिथिः 5 व 6 मार्च 2013 | **स्थानःआर्यसमाज पंजाबी बाग (पश्चिम), न.दि.**

निवेदक :

धर्मेन्द्र कुमार (सचिव ,संस्कृत अकादमी दिल्ली)

ब्र.राजसिंह आर्य प्रधान विनय आर्य महामन्त्री (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)

सत्यानन्द आर्य, (प्रधान, आर्य समाज पंजाबी बाग (पश्चिम)

आर्य समाज आसनसोल (बंगाल) का वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ सम्पन्न

अहिन्दी भाषाभाषी राज्यों में हिन्दी प्रचार में आर्यसमाज का योगदान महत्वपूर्ण – आचार्य बलदेव

आर्यसमाज आसनसोल 1000 कन्याओं के शिक्षण की अतिरिक्त व्यवस्था करेगा – *जगदीश केडिया (प्रधान)*

आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ वार्षिकोत्सव

अभी कुल 5000 बच्चें पढ़ते हैं, आर्य समाज आसनसोल द्वारा संचालित विद्यालयों में

विस्तृत समाचार पृष्ठ 6 पर...

वेद-स्वाध्याय जीवन धारा सोम की ओर बहे : जीवन का एक अतीव संकल्प और प्रार्थना - स्वामी देवव्रत सरस्वती

नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम्। तक्षा रिष्टं रुतं भिषग्ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव।। 1।।
कारुरहं ततो भिषगुपलप्रक्षिणी ननना। नानाधियो वसूयवोऽनु गाइव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परि स्रव।। 3।।(ऋ.9/112/1,3।।

अर्थ– (नः) हमारी (धियः) बौद्धिक क्षमता (वा उ) एवं (आनम्) जीविका के साधन (नाना) नाना प्रकार की हैं। (जनानाम्) मनुष्यों के (व्रतानि) कर्म भी (वि) विविध) हैं। जैसे (तष्टा रिष्टम्) बढ़ई लकड़ी काट उससे अनेक उपकरण, सामान बनाने की इच्छा करता है (भिषक् रुतम्) वैद्य रोगी की प्रतीक्षा में है और ब्रह्मा सुन्वन्तम् इच्छति) वेद का विद्वान् यज्ञ करने वाले को चाहता है (इन्दो) हे ज्ञानी तू (इन्द्राय) इन्द्र की ओर बह निकल (अहम् कारुः) मैं शिल्पी हूँ। (ततः भिषक्) मेरा पुत्र चिकित्सक है (नना) मेरी माता (उपल प्रक्षिणी) चक्की चलाती है। हम लोग सभी (वसूयवः) धन की इच्छा करते हुये (नाना धियः) अनेक विध कर्मों के करने वाले होकर भी (अनु गाः इव) जैसे गायें दिन भर जंगल में चरने जाती हैं और रात्रि को एक गोष्ठ में बैठती हैं, वैसे ही हम (तस्थिम) मिलकर रहते हैं। (इन्द्रो) हे परमात्मन् (इन्द्राय) हमें अपने ऐश्वर्य की ओर (परि स्रव) ले चलो।

कौटिल्य अर्थशास्त्र में कहा है **सुखस्य मूलं धर्मः धर्मस्य मूलमर्थः** सुख का मूल धर्म और धर्म का मूल धन है। इसीलिये शास्त्र मर्यादा के अनुसार सम्मानपूर्वक जीवन जीने के लिये अर्थ संग्रह का उपाय प्रत्येक को करना चाहिये। अर्थ से ही धर्म, काम और स्वर्ग, सुख विशेष की सिद्धि होती है। शरीर यात्रा का चलना बिना संसाधनों के सम्भव नहीं है। जैसे छोटी नदियों का जल ग्रीष्म ऋतु में सूख जाता है वैसे अल्प बुद्धि पुरुष की सारी योजनायें धन के अभाव में निष्फल हो जाती हैं। यदि धन के बिना ही स्वर्ग की प्राप्ति होती तो जंगलों में रहने वाले मृग, शूकर और पक्षी कभी के स्वर्ग में पहुँच जाते।

किसी विचारक ने ठीक ही कहा है – **विद्या, वितर्को, विज्ञानं स्मृति स्तत्परता क्रिया। यस्यैते षड्गुणास्तस्य न साध्यमति वर्तते।।**

जिस व्यक्ति के पास विद्या, तर्क–वितर्क करने की बुद्धि, किसी कला कौशल का विशेष ज्ञान, स्मरण शक्ति कार्य करने में उत्साह और कार्य करने की विधि ये छः गुण विद्यमान हों उसके लिये कोई कार्य असम्भव नहीं रह जाता है। यह आवश्यक नहीं है कि पुरानी पीढ़ी जो कार्य या पेशा करती आ रही है, परिवार उसी परम्परा का दास बन धनाभाव से पीड़ित हो कष्टों में जीवन व्यतीत करे। ईमानदारी, मेहनत और शास्त्र मर्यादा को ध्यान में रखकर धर्मानुकूल प्रारम्भ किया कोई भी व्यवसाय बुरा नहीं माना जाता। बुरा और अधर्मी वह है जो अवैध ढंग से बिना पुरुषार्थ के दूसरों की कमाई खाता है।

मनुष्यों की बुद्धि, क्षमता और रुचि भिन्न होने से उनके आजीविका के साधन भी भिन्न–भिन्न होते हैं। मन्त्र में इसका सुन्दर काव्यात्मक शैली में वर्णन किया है– **कारुरहम्** मैं घर का स्वामी शिल्प विद्या का विशेषज्ञ हूँ। **ततः भिषक्** मेरा पुत्र चिकित्सक है और मेरी पत्नी चक्की पीसती है। हम विविध प्रतिभाओं और व्यवसाय वाले परिवार के लोग फिर भी परस्पर उसी प्रकार मिलकर रहते हैं जैसे दिन भर गायें जंगल में अपनी रुचि के अनुसार तृण–घास खाकर रात्रि में गोष्ट में मिलकर बैठती हैं।

जैसे कारीगर बढ़ई वृक्षों को काट उनकी लकड़ी से बहुत सारे उपयोगी सामान बनाने की इच्छा रखता है, वैद्य, चिकित्सक रोगी की प्रतीक्षा करता है और कर्मकाण्ड का ज्ञाता पुरोहित या ब्रह्मा यही देखता रहता है कि कोई यज्ञ करवाने वाला आए। ऐसे ही दूसरे व्यवसायों में लगे हुये लोग अपने ध्येय का ही चिन्ता करते हैं और यह कोई अनुचित बात भी नहीं है यदि इन सबका उद्देश्य अच्छा हो।

वेद कह रहा है –**इन्द्राय इन्दो परिस्रव** हे ज्ञानी, ऐश्वर्य के इच्छुक जन तेरे जीवन की सरिता उस सब ऐश्वर्यों के स्वामी की ओर प्रवाहित होनी चाहिये। स्मरण रहे धन साधन है साध्य नहीं। तुम्हारा साध्य या प्रापणीय लक्ष्य, जिसके लिये तुम इतना पुरुषार्थ कर रहे हो, वह तो परमेश्वर है।

जिस धन के लिये तुम इतना लालायित हो रहे हो वह अन्त समय में साथ जाने वाला नहीं है। धन के स्थान पर धन के स्वामी को जीवन का उद्देश्य बनाया जाये तो तुम्हारी सभी कामनाओं की पूर्ति हो जायेगी। उसके उपासक के पास सारी ऋद्धि–सिद्धि करबद्ध होकर उपस्थित हो जाती हैं। तुम्हारा गीत अब धन प्राप्ति के स्थान पर यह होना चाहये।

यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँल्लोके स्वर्हितम्।

तस्मिन्मां धेहि पवमानामृते लोके अक्षित इन्दोयेन्दो परिस्रव ।। ऋ. 9.113. 7 ।।

(इन्दो) हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन् (पवमान) हे सबको पवित्र करने वाले (यत्र) जिस मोक्ष में (**अजस्रं ज्योतिः**) निरन्तर ज्योति जगमगा रही है, जहाँ सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश हो रहा है। (**यस्मिन् लोके**) जिस मोक्ष स्थान में (स्वः **हितम्**) अक्षय सुख ही सुख विद्यमान है। (**तस्मिन् अमृते**) उस अमृत के धाम (**अक्षिते**) जहाँ बुद्धि और क्षय नहीं है अर्थात् जहाँ शाश्वत मोक्ष का आनन्द बना रहता है उस स्थान में (**मां धेहि**) मुझे स्थापित कीजिए। याद रखो **न हि वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः** (कठो0 1.26) धन से मनुष्य की कभी तृप्ति नहीं होती। धन के स्थान पर यदि उस धनपति का दर्शन कर लिया तो तुम्हारा जीवन धन्य हो जायेगा।

शेष पृ

महर्षि देव दयानन्द का कृतित्व और व्यक्तित्व : जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स की दृष्टि में

महर्षि देव दयानन्द के कृतित्व और व्यक्तित्व पर भारत में अनेक चिन्तकों, समाजसेवियों, साहित्यकारों और दार्शनिकों ने लेखनी चलाई है। लेकिन विदेशी विद्वानों और दार्शनिकों ने क्या लिखा और कहा है, बहुत कम लोगों को ज्ञात है। जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स ने महर्षि के कृतित्व और व्यक्तित्व को भावपूर्ण कविता में ढाला है। ज्ञातव्य है, महर्षि से सन्दर्भित ऐसी कविताएँ अभी तक भारत में नहीं लिखी गईं, इससे इन कविताओं का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसका काव्यानुवाद वेद–विचारक और नवयोग के प्रतिस्थापक डॉ. ज्ञानचन्द्रजी ने इसका काव्य भावानुवाद साहित्यपूर्ण भाषा में किया है। यह श्रद्धात्मक काव्य अत्यन्त श्रद्धा के साथ धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। आर्य महानुभाव इसे बहुत ही श्रद्धा और भक्तिभाव से परिपूर्ण होकर ही पढ़ें। प्रस्तुत धारावाहिक का तेरहवाँ भाग प्रकाशित किया जा रहा है। महर्षि के **जीवन दर्शन** से सम्बन्धित धारावाहिक के इस भाग को भी पूर्व की भाँति आप सभी भक्तिभाव एवं श्रद्धा के साथ पढ़ेंगे ऐसी आशा है– **अखिलेश आर्येन्दु**

SWAMI DAYANANDA SARSWATI THE RISHI WHO SCATTERED LOVE UPON THE PATH YEARS. THE DEATHLESS PROPHET OF THE SOUL.

He did not make the loneliness his home
He did not vainly navigate the sly.
His humble path led him mongo men to roam
To teach and bless,-and among men to die.

And such a death ! Ye shining stars shed tears,
Tremble ye suns; for one has passed away
Who scattered love upon the path of years,
And dying blest the murd'rer who did slay.

And yet, why tears of woe for one so great?
Should not the stars ring forth in ecstasy
O'er one who drowned in love the bitt'rest hate.
And on his death god murd'ree free?

No more fan three the changing round of time
They star blest road has reached that mighty goal
Neath nobler skics where spirit cymbals chime
To greet the deathless Prophet of the Soul.

And is there not a place in yon great sky
From which we still may hear his voice of love?
Oh, read his message in each tear-stained eye
Follow his steps and trust. God is above.

It is done; the silence weepeth,
Oh thou hand that wrought the avil,
Take thy clicking coin as guerdon.
Thine was an all sacred mission,
For to serve a Saint, a Rishi,
Is a task the scholar seeketh,
Task called holy in the scriptures.

To prepare the daily viands
Of a God-man, Spirit Prophet.
Is a labour dear to devas.
But oh thou ! What helfiend whispered
In thy ear that serpent maessage?
"Coin, hard coin for poison, poison !"
Oh, the hand, the hand that mixed it,

Woe unto that hand in sorrow,
Thousand woes unto the giver
Of the silver for the life blood
That to gods and men was holy.
And when he, the wretch in evil.
Even as of old Iscariot,
Saw the bloodcrime of his misdeed,
When the work was past recalling,
Then he felt in dread aod terror
All the loathsomeness and horror
Of the crime he had committed,
And in agony and trembling
Groaning neath remorse of conscience
Went he and fell in repentance.
At the feet of Dayananda,
Made his terrible confession.
And Dayanand, the ever god like,
Smiled in love and kind forgiving.
"Ah," spake he. "my erring brother,
Soon the hand of law will find thee,
Take this money seek the distance,
Flee in haste across the border,
Go thou hence, and do not tarry,"
Then in quiet self-surrender
sat he still, the end awating

softly lisping holy mantras,
Till his soul rose up to glory.
To those silent realms where wisdom,
love and peasce do regin forever,
where great souls do oft assemble,
To cunsult in mighty conclave
on the fates of suns and planets,

send down blessings, guide the foot steps
of the restless ering wanderers
Travelling in the maze of maya.
Thus unto his own returned he
whence he still protects and guideth
all his own, who try to follow
on the road which he did wander.
and his work does live and flourish
sending forth its deathless message
onward over land and ocean.
where a holy man has wandered.
en the very ground is holy.
And his words do live and blossom
in this strength of their won wisdom,
in the truth they are conveying
and we, who are still in darkness,
Groping in this restless earthworld,
let us in his name assemble.
let us join in strong endeayour,
in fond love and selfess service,
Try to follow in his tootsteps,
Here his message in the the spirit,
And in future generations.
all will yield its fruit - Ful haryest
peace and blessing to all beings.

जीवन और मृत्यु : एक प्रेरक एवं ज्ञान परक विवेचना

आचार्य रामज्ञानी आर्य

अध्यात्म क्षेत्र में यह विचार का विषय हजारों वर्षो से चलता आ रहा है कि मृतक किसे कहा जाए और जीवित किसे? जिसकी आशा मर गई, जिसका लक्ष्य छूट गया, जिसका प्रकाश बुझ गया वह मृतक है। भले ही वह सांस ले रहा हो। उपरोक्त सन्दर्भ भले ही आलंकारिक हो, पर कहा यही गया है कि आदर्श विहीन, निरुद्देश्य,भारभूत जीवन से तो मृतक ही अच्छे हैं, जिसने धरती का अन्न, जल नहीं बिगाड़ा और मल–मूत्र से वायु मण्डल को गन्दा करना बन्द कर दिया।

जन्म का अर्थ क्या है –

इसका लक्षण प्रथम यह करना चाहिए कि शरीर के व्यापार और क्रिया करने योग्य परमाणुओं का संघात जब होता है, तब जन्म होता है अर्थात् सब साधनों से युक्त हो कर क्रिया योग्य जब शरीर होता है तब जन्म होता है। सारांश यह है कि इन्द्रिय और प्राण (अन्तःकरण) ये शरीर के मध्य जब उपयुक्त होते हैं तब जन्म होता है, जन्म अर्थात् शरीर और जीवात्मा का संयोग। इससे स्पष्ट होता है कि शरीर और जीवात्मा इनका वियोग मरण कहलाता है। अब मृत्यु की सुनिश्चित घोषणा सम्बन्धी व्याख्या का प्रश्न पहले की अपेक्षा कहीं अधिक जटिल और विवादास्पद हो गया है।

सृष्टि की सृजन एक अति रहस्यमय प्रक्रिया है। जो इस रहस्य को जान समझ लेता है वह ऋषि–महर्षि बन जाता है। इसी प्रकार जीवन और मृत्यु भी अति रहस्यमय घटनाएँ हैं। विज्ञान जन्म और मृत्यु के सम्बन्ध में अभी उतना भी खोज नहीं कर पाया है जितना आध्यात्मिक ग्रन्थों में। वेदों और उपनिषदों में जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में अनेक रहस्यों को सूत्र रूप में वर्णित किया गया है। जीवन क्या है? मृत्यु क्या है? दोनों में परस्पर क्या सम्बन्ध है के अतिरिक्त अनेक रहस्यों के सम्बन्ध में जानकारी दी गई है। लेकिन वेदों और उपनिषदों में मृत्यु के स्थान पर 'अमरता' प्राप्त करने की बात भी की गई है। क्या मनुष्य 'अमरता' प्राप्त कर सकता है? इसपर आर्ष ग्रन्थों के अतिरिक्त पाश्चात्य ग्रन्थों में भी अनेक प्रकार की जिज्ञासाएँ प्रकट की गई हैं। जीवन और मृत्यु वास्तव में क्या है, इस पर आधारित है आर्य विद्वान आचार्य रामज्ञानी आर्य का यह विज्ञान परक लेख। आशा है लेख पाठकजनों को प्रसन्द आएगा। लेख प्रकाशित करने का हमारा उद्देश्य :जीवन व मृत्यु' की विज्ञानपरक जानकारी देना और इसके सम्बन्ध में फैली भ्रान्तियों का निवारण करना है।

शास्त्रीय मृत्यु–क्लिनिकल डेथ पहले होती है और जीवन का अन्त बायोलाजिकल डेथ की स्थिति उसके बाद में आती है। दोनों के बीच कितने समय का अन्तर रहता है? इसे भी जानने की आवश्यकता है।

इसका कोई निश्चित नियम नहीं है। वह अन्तर छोटा भी हो सकता है और बड़ा भी। प्रख्यात मृत्यु संशोधनकर्ता प्रो. नेगोस्की ने मृत्यु को चार चरणों में विभाजित किया है। पहला चरण वह है जिसमें श्वास की गति और हृदय की धड़कन मन्द होती जाती है और अन्ततः बंद हो जाती है, फिर मस्तिष्कीय चेतना किसी रूप में जीवित रहती है। इलेक्ट्रोन एन्सेफलोग्राम यंत्र से पता लगाया जा सकता है कि मस्तिष्क पूर्णतया मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ है। वह मन्द गति से कई देह घटकों को सन्देश भेज रहा है। मृत्यु का दूसरा चरण वह है जिसे सेरिब्रल डेथ कहते हैं। इसमें मस्तिष्क शरीरगत अवयवों को अपने सन्देश देना बन्द कर देता है। इसलिए शरीर की हलचलें रुक जाती हैं, फिर भी चेतना का पूर्ण अन्त नहीं होता। मस्तिष्क अपनी सत्ता में केन्द्रित रहता है और शरीर के जीवाणु मस्तिष्क के साथ सम्बन्ध विच्छेद हो जाने पर भी अत्यन्त मन्द गति से अपनी हरकतें करते रहते हैं। शरीर का कोई अंग कट जाने पर वह कुछ समय तक उछलता रहता है।

तीसराचरण है : क्लिनिकल डेथ– शास्त्रीय मृत्यु। इसमें नाड़ी की गति, हृदय की धड़कन, श्वास क्रिया रुक जाती है और मस्तिष्क गहरी अचेतना में डूब जाता है। इस स्थिति में भी शरीर विश्लेषण करने पर पता चलता है कि किन्हीं अवयवों में मन्दगति से स्थानीय हलचलें चल रही हैं। इस स्थिति में उच्च स्तरीय उपचार से पुनः जीवन को लौटाया जाना सम्भव हो सकता है।

चौथा चरण : इस चरण में जीवन की समस्त सम्भावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। पूर्ण मृत्यु का साम्राज्य छा जाता है और जीवाणुओं का सड़ना, विघटित होना आरम्भ हो जाता है।

चौबिस घंटे बाद तक रोगियों में जीवन के चिह्न पाये गये और उन्हें फिर सजीव किया जा सका। जर्मनी के वैज्ञानिक ने ऐसे मृतकों को पुनर्जीवित करने में प्रसिद्ध प्राप्त की है। उनके नाम है– डॉ. बुशर्ट और डा. दिट्मेयर। जीवन का अन्त चेतना के अन्त के साथ होता है। सोचने विचारने या अनुभव करने की चेतना तो क्लोरोफार्म जैसी औषधियों से ही उत्पन्न की जा सकती है। उस स्थिति को मृत्यु तो नहीं कहा जा सकता। ठीक इसी प्रकार मृत्यु समय में गहरी मूर्छा होने के कारण यदि अवयवों ने काम करना बन्द कर दिया है तो इसे कारखानों की तालाबन्दी के समय मजदूरों की छुट्टी भर कहा जायेगा। मृत्यु नहीं। मृत्यु की परख तो चेतना के सभी लक्षण समाप्त हो जाने से ही की जा सकती है, क्योंकि जीवन और चेतना वस्तुतः एक ही बात है।

अध्यात्म विज्ञान का दृष्टिकोण बिलकुल स्पष्ट है, जो स्वयं जीवन प्राप्त करने के लिए उसे मन्दता की मूर्छा से उबरने का अवसर निश्चित रूप से मिलेगा। वह अर्द्ध मृतक की स्थिति त्याग कर अवश्य ही पूर्ण जीवितों की पंक्ति में खड़ा होगा जो इस प्रकार है–

1. हवा आवेश में आकर, दीपक को बुझाती हुई चली गई। पर दीपकों ने कहा वह एक उद्वेग मात्र था। जीना मरना हमें साथ ही है। हवा के बिना हम रहेंगे नहीं। धूप चमकी और ऐसी तड़पी मानों बेचारी छाया का अस्तित्व ही मिटा देगी। पर छाया शान्त रही। उसने बुरा न माना और इतना ही कहा– एक हाथ से ताली नहीं बजती। जब मैंने धूप के साथ रहने की ठानी हुई है तो उसकी अकेली कड़क पृथकता उत्पन्न करने में सफल क्यों हो सकती है?

2. मृत्यु ने जीवन को कुचल कर रख दिया, पर जीवन यही कहता रहा– मृत्यु मेरी अभिन्न सहचरी है। उसकी गोद में सोने का लोभ मैं संवरण कर ही नहीं सकता। बात कुछ अटपती सी है कि एक की रुखाई का दूसरे पर असर न पड़ा, पर देखा ऐसा भी गया है कि मजबूती से पल्ला पकड़ने वाले से आँचल छुड़ाकर भाग सकना भी सरल नहीं होता।

3. हवा और दीपक, धूप और छाया, श्वास और प्रश्वास, जीवन और मृत्यु की स्नेह साधना को एकाङ्गी भले ही माना जाय, पर उसमें झाँकती है प्रेम की प्रौढ़ता ही। (**विद्वान लेखक शिक्षक रहे हैं, अब आर्य समाज के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित हैं**)

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव एवं ऋषि बोध उत्सव के शुभ अवसर पर विशेष छूट

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

~~150 रुपये~~ सी डी 5 सी डी का सेट

मात्र100 रुपये

(डाक व्यय अलग देय होगा)

25, 26, 27, 28+कवि सम्मेलन आर्य वीर दल व्यायाम प्रदर्शन एवं लेजर शो पैसा भेजने पर ही सीडी भेजी जा सकेगी अथवा कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

सम्पर्क करें :- विजय आर्य, (9540040339)

वैदिक प्रकाशन विभाग, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

15-हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन: 011-23360150,23365959

अन्तरराष्ट्रीय महासम्मेलन में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभावपूर्ण ढंग से सम्पन्न

सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन आचार्य बलदेवजी द्वारा किया गया

अनेक आर्य शिक्षण संस्थाओं के बच्चों ने की कार्यक्रम में भागीदारी

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 25 से 28 अक्टूबर 2012 को रोहिणी, नईदिल्ली के सेक्टर 12 में धूमधाम और और भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जहाँ वेद, शास्त्रों, देश, धर्म और अनेक अन्य विषयों पर चर्चा और गोष्ठियों का आयोजन किया गया उसी के मध्य ऐसा भी एक प्रेरक, सन्देशयुक्त और मनोरंजन से पूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति भी की गई, जिसमें आर्य जगत् की अनेक शिक्षण संस्थाओं के बालक–बालिकाओं ने बहुत ही रुचिपूर्वक भाग लिया। उक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम महासम्मेलन स्थल के हॉल संख्या 8 में सम्पन्न हुआ। इस सांस्कृतिक

शेष पृष्ठ 6 पर.....

महाशय धर्मपाल MDH दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बामनिया , जि. झाबुआ का निर्माणाधीन भवन

विगत दिनों बामनिया, जनपद झाबुआ (म.प्र.) में निर्माणाधीन महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयान्नद आर्य विद्या निकेतन का आर्य नेताओं, विद्वानों एवं आर्य कार्य कर्ताओं ने निरीक्षण किया। ज्ञातव्य है वनवासी बहुल इस क्षेत्र में ईसाई मिशनरियाँ बड़े पैमाने पर सेवा और शिक्षा के नाम पर मत परिवर्तन का अभियान चलाया हुआ है। इसे रोकने के लिए वर्षो से दयानन्द सेवाश्रम संघ बड़े स्तर पर सेवा और शिक्षा के माध्यम से वैदिक धर्म और वैदिक शिक्षा का अभियान चलाया हुआ है। वहाँ की आवश्यकता को देखते हुये महाशय धर्मपाल जी द्वारा इस बड़े विद्यालय का निर्माण किया जा रहा है। यहाँ निर्माणाधीन विद्यालय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत ही कार्य करेगा। श्री जोगेन्द्र खट्टर जी ने कहा कि जल्द ही विद्यालय का उद्घाटन किया जायेगा। निरीक्षण कार्ताओं में प्रमुख रूप से भूमि दान दाता सर्वश्री ठाकुर साहब, आचार्य जीववर्धनजी, विनय आर्यजी,नरेन्द्र नारंगजी, विश्वास सोनीजी, संजय कुमारजी सम्मलित थे।

निर्माणाधीन विद्यालय का निरीक्षण के उपरान्त आर्य महानुभाव एवं आर्य कार्य कर्ता

वेद प्रचार वाहन के द्वारा दिल्ली क्षेत्र में किया जा रहा है वेदों का प्रचार-प्रसार

प्रचार का नया अध्याय आरम्भ हुआ ग्रामीण क्षेत्रों में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में विगत वर्षो से 'वेद प्रचार वाहन' के माध्यम से दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों की आर्य समाजों और गाँवों में वेदों का प्रचार-प्रसार का कार्य तीव्रगति से किया जा रहा है। जिन आर्य समाजों एवं गाँवों में अभी तक वेद प्रचार का कार्य किया जा चुका है, उनमें प्रमुख हैं आर्य समाज औचन्दी, औचन्दी गाँव , दरियापुर, औचन्दी बार्डर, नारा गाँव, गढ़ी कुण्डल, बवाना, सुल्तानपुर, कुतुबगढ़, गुरुकुल नरेला, कटेवड़ा, बवाना जे.जे कालोनी, हलालसूर, बड़ौदा गाँव, नारी गाँव, मदर खजानी स्कूल, मुबारक पुर, बवाना औद्योगिक क्षेत्र, उपदेश कौर पब्लिक स्कूल बवाना, पूठगाँव औ बड़ौदा गाँव(उ.प्र.) प्रमुख है।

यहाँ वेद प्रचार वाहन प्रतिदिन दोपहर को विद्यालयों के सामने खड़ा होता हैं जहाँ बच्चे छोटी-छोटी पुस्तके खरीद ते हैं। तथा सांयकाल विभिन्न गावाँ में सार्वजनिक स्थान पर खड़ा होकर यहाँ वाहन प्रचार कार्य करता है।

वार्षिकोत्सव, वेद कथा तथा वेद प्रचार समारोह आदि में वेद प्रचार हेतु सभा की भजनीक टोलियों को आमंत्रित कर लाभ उठाएँ

ज्ञातव्य है सभा द्वारा इस समय जिन प्रमुख विद्वान भजनोपदेशकों की सेवाएँ वेद प्रचार कार्य के लिए उपलब्ध हैं। वे हैं – पं. **सन्दीप आर्य मो. संख्या 09650183332 एवं पं. कुलदीप आर्य मो. 09540040343** है। **उपरोक्त भजनोपदेशकों को आर्य समाजें अपने उत्सवों में आमन्त्रित कर लाभ उठाएँ।**

स्वामी श्रद्धानन्द : युवकों के नाम प्रेरक सन्देश

डॉ. उमा शशि दुर्गा

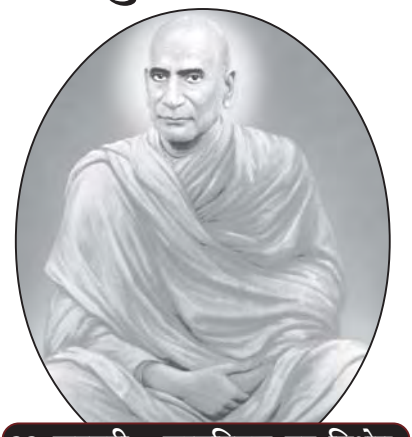

22 फरवरी : जन्मदिवस पर विशेष

भारत की पवित्र भूमि पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से संसार का पथ आलोकित किया। महापुरुषों की इस परम्परा में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पंजाब के जिला जालन्धर के तलवन में सन् 22 फरवरी, 1856 को जन्मे बालक मुंशीराम को स्वामी श्रद्धानन्द बनाने का पूरा श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है। महर्षि दयानन्द से सम्पर्क के पहले मुंशीराम का व्यक्तिगत जीवन सामाजिक प्रभावों के कारण अनेक दुर्गुणों और दुर्व्यसनों से भरपूर था, किन्तु 1882 ई. में बरेली आगमन पर महर्षि दयानन्द से भेंट होने के उपरान्त प्रथम दर्शन से ही इनकी जीवन दिशा बदल गई और वे महर्षि दयानन्द के आदर्शों के प्रति समर्पित हो गए। जीवन–भर ऋषि के सिद्धान्तों ने उन्हें शक्ति प्रदान किया और वे निरन्तर कल्याण मार्ग की ओर अग्रसर होने लगे।

12 अप्रैल 1917 को मुंशीराम जी ने संन्यास ग्रहण किया। संन्यास दीक्षा लेते हुए वे कहते हैं–श्रद्धा से प्रेरित होकर ही आज तक के इस जीवन को मैंने पूरा किया है। श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्या देवी है, अब भी श्रद्धाभाव से प्रेरित होकर ही संन्यास आश्रम में प्रवेश कर रहा हूँ। इसलिए इस यज्ञकुण्ड की अग्नि को साक्षी रखकर मैं अपना नाम 'श्रद्धानन्द' रखता हूँ, जिससे मैं अगला सारा जीवन भी श्रद्धामय बनाने में सफल हो सकूँ।"

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने अनेक क्षेत्रों में कार्य किया। उनका हर कार्य प्रेरणास्पद और क्रान्तिकारी रहा है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के वे सूत्रधार रहे। शिक्षा के क्षेत्र में हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना उनका क्रान्तिकारी कार्य कहा जा सकता है। अनेक राष्ट्रभक्त नवयुवकों का निर्माण गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से किया। सन् 1913 को नव स्नातकों को दिया गया उपदेश उनके शिक्षा के मन्तव्य को स्पष्ट करता है– "पुत्रो ! आज मुझे इतनी प्रसन्नता है कि तुम उसका अनुभव नहीं कर सकते। मुझे अपने जीवन में जिस बात को देखने की आशा नहीं थी, उसे मैंने देख लिया। यदि आज मेरे प्राण भी चलने को तैयार हों तो मैं बड़ी खुशी से उन्हें आज्ञा दे सकता हूँ। इस आनन्द का कारण मैं बताना निरर्थक समझता हूँ, तुममें से प्रत्येक उसे अनुभव कर रहा है। लोग समझा करते थे कि हम दिमागों को परतंत्र बनाना चाहते हैं परन्तु अब लोग देख रहे हैं कि यदि कोई ऐसा स्थान है जहां स्वतन्त्रता नहीं रुक सकती तो वह यही स्थान है। मेरा अपने ब्रह्मचारियों को केवल एक ही उपदेश है, मत देखो कि लोग तुम्हें क्या कहते हैं, सत्य को दृढ़ता से पकड़ो। सारे संसार का सत्य ही आधार है। यदि तुम्हारा मन, वचन और कर्म सत्यमय है, तो समझो कि तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया। प्रसिद्धि के पीछे भागने से किसी की प्रसिद्धि नहीं हुई। अपने सामने एक उद्देश्य रख लो, उसी में लग जाओ, फिर गिरावट असम्भव है। उपदेशक बनो या मत बनो, पर एक बात याद रखो, बनावटी मत बनो। सबको परमात्मा वाणी की शक्ति या उपदेश देने की शक्ति नहीं देता। वाणी न हो न सही किन्तु आचरण सत्यमय हो। नट न बनो, न इस संसार को नाट्यशाला बनाओ। स्वच्छ जीवन रखो। यदि इस प्रकार का स्नातकों का आचरण होगा तो मेरा पूरा संतोष है।"

स्वामी श्रद्धानन्द का यह दीक्षान्त भाषण आज भी विद्यार्थियों के लिए प्रासांगिक है।

पृष्ठ 4 का शेष अन्तरराष्ट्रीय महासम्मेलन में....

कार्यक्रम में बच्चों के अतिरिक्त भजनोपदेशकों के द्वारा भजन भी प्रेरक ढंग से प्रस्तुत किए गए।

महासम्मेलन के प्रथम दिवस 25 अक्टूबर को सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विशेष रूप से मेरठ के सर्वश्री सुभाष मल्होत्रा, बरेली के विजय बहादुर गौड़जी, संजय चौहानजी, भीमसेन कामराहजी, दिल्ली की आर्य शिक्षण संस्थाओं से श्रीमती उषा रोहानी, तृप्ता शर्माजी के अतिरिक्त बड़ी संख्या में देश–विदेश से आए आर्य महानुभाव सपरिवार उपस्थित थे। चार दिवसीय इस सांस्कृतिक उत्सव में महर्षि दयानन्द आर्य पब्लिक स्कूल शादीखामपुर, रघुमल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल राजा बाजार, नईदिल्ली, रघुमल आर्य कन्या विद्यालय राजाबाजार, रघुमल आर्य पब्लिक स्कूल राजाबाजार, आर्य विद्यामन्दिर केशवपुरम्, आर्य विद्यालय बिरला लाइन्स के अतिरिक्त देश की अनेक आर्यसमाजों, आर्य वीरांगनादल, आर्य वीरदल व आर्ष गुरुकुलों के बच्चों द्वारा की गई प्रस्तुतियाँ अत्यन्त प्रेरणाप्रद और ज्ञानवर्धक थीं। इन आर्ष गुरुकुलों में आर्य गुरुकुल रानीबाग, न.दि. आर्ष कन्या गुरुकुल सैनिक विहार,न.दि. आर्य गुरुकुल शिवगंज सिरोही, राजस्थान, आर्य गुरुकुल जींद, आर्य गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल लौवा कला, बहादुरगढ़ और आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और हरियाणा के आर्य वीरों ने बढ़ चढ़कर इस अनोखे सांस्कृतिक उत्सव में अपनी कलाओं का प्रदर्शन किए।

आर्य शिक्षण संस्थाओं के बच्चों के अतिरिक्त चारों दिन आर्य जगत् के भजनोपदेशकों के मधुर और प्रेरणाप्रद भजन होते रहे। इनमें मुम्बई के श्री हेमन्तजी, दिल्ली की श्रीमती सुदेश, पं. दिनेश पथिक, हरिद्वार की डॉ. नीलम छाबरिया, श्रीमती मिथिलेश के अतिरिक्त अनेक भजनोपदेशकों के भजनों ने चारों दिन उपस्थित आर्य महानुभावों को अपने भजनों द्वारा प्रभावित किया। इस अवसर पर आर्य शिक्षण संस्थाओं की अनेक शिक्षिकाएँ, प्राचार्या, गुरुकुल के आचार्य और गुरूजी के अतिरिक्त देश के अनेक क्षेत्रों के अनेक विशिष्ठ व्यक्तियों की भागीदारी कार्यक्रम को सफल बनाने में कम महत्त्वपूर्ण नहीं रही।

इस चार दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव का संयोजन, सम्पादन और संचालन आर्य वीरांगना श्रीमती अनिता चौहान जी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती नीरज सूद, कु. प्रियंका, कु. ऋतुका खेत्री, श्रीमती तृप्ता शर्मा, उषा रेहानी के अतिरिक्त अनेक आर्य महानुभावों एवं आर्य बहनों का विशेष योगदान रहा। इस प्रकार इस सांस्कृतिक उत्सव की प्रभावपूर्ण प्रस्तुतियों का प्रभाव हजारों लोगों पर अमिट रूप से पड़ा। –

श्रीमती अनिता चौहान, संयोजिका

पृष्ठ एक का शेष आर्य समाज आसनसोल.....

आर्य समाज आसनसोल का वार्षिकोत्सव 9 फरवरी से 14 फरवरी तक आसनसोल आर्य समाज द्वारा संचालित तीन विद्यालयों डी.ए.वी हायर सेकेन्डरी स्कूल, आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा दयानन्द हायर सेकेन्डरी विद्यालय के वार्षिकोत्सव के साथ मनाया गया। स्थानीय मुर्गासोल स्थित आर्य कन्या उच्च विद्यालय में पूर्व सांसद श्री आर.सी सिंह ने ध्वजारोहण किया। फिर शोभा यात्रा निकाली गई, जिसमें महर्षि दयानन्द की झांकी, बच्चों द्वारा बनाए गए पोस्टर और कटआउट को सम्मिलित किया गया था। 10 फरवरी को दयानन्द विद्यालय में बने प्रेक्षागृह और कम्प्युटर लैब का उद्घाटन नेताओं द्वारा किया गया। 12 फरवरी को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। 13 फरवरी को सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेवजी का प्रेरक उद्बोधन हुआ। आचार्य जी ने कहा, अहिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों में आर्य समाज हिन्दी प्रचार के लिए हमेशा अग्रसर रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज के अनेक समाजोपयोगी कार्य जनता तक पहुँचाएँ जाएँ। आर्य नेताओं का स्वागत करते हुए समाज के प्रधान श्री जगदीश केडियाजी ने कहा, अभी तक आर्य समाज आसनसोल से सम्बन्धित विद्यालयों में 5000 बच्चें शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त जो महत्त्वपूर्ण कार्य आगे होना है उसमें 1000 कन्याओं के शिक्षण की अतिरिक्त व्यवस्था करना है। उत्सव में आर्य जगत् के अनेक विद्वानों के प्रवचन और भजनोपदेशकों के भजन हुए। उत्सव प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा।

– मन्त्री, आर्य समाज आसनसोल

वार्षिकोत्सव समारोह में विशेष रूप से सार्वदेशिक सभा के उपपधान श्री आनन्द कुमार आर्य, सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री सर्वश्री दीनदयाल गुप्त, विनय आर्य एवं भारत भूषण त्रिपाठी उपस्थित थे

प्रवेश प्रारम्भ

वैदिक संस्कृति एवं नैतिक वातावरण से ओत प्रोत, सी.बी.एस.सी. पाठ्यक्रम पर आधारित एक पूर्ण आवासीय गार्गी वैदिक कन्या विद्यालय (गुरुकुल) कनियान, मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) प्रथम सत्र 2013-2014 के लिए कक्षा 4,5,6, हेतु 1 मार्च से प्रवेश प्रारम्भ है। **सम्पर्क सूत्र :-** शीशपाल सिंह, प्रबन्धक (09760461700) सुमन आर्या, प्रधानाचार्या (07799046216)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में स्थापित 'आई.वी. आर.एस.; सिस्टम से आर्य समाजें जुड़कर लाभ उठाएं

आर्यजन अपने आर्य समाज का पूर्ण रिकार्ड फार्म में भरकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय पर भेजें।

आर्य संस्थाओं के जानकारियों के लिये डायल करें 011-23488888

आज सूचना का युग है, जो सूचना प्रसारण की नई तकनीकी ने सारे विश्व की दूरियाँ समाप्त कर दी हैं। आर्य समाज का संगठन आज भारत के 24 राज्यों एवं विश्व के लगभग 27 देशों में फैला है। अनेक विद्यालय आर्यसमाज मन्दिर, आश्रम,गुरुकुल, अनाथालय, अस्पताल, अनेक विद्वानों, संन्यासी, भजनोपदेशक आदि सैकड़ों की संख्या में प्रचार कार्य में संलग्न हैं, किन्तु इन 10000 से अधिक व्यक्तियों/ संस्थाओं का पता व सम्पर्क किसी भी व्यक्ति द्वारा कर पाना लगभग असम्भव है। किसी भी आर्य समाज का सम्पर्क सूत्र हमें ढूढना हो तो हमें अत्यन्त परिश्रम करना पड़ता है। किसी विद्वान व संन्यासी महानुभाव को हम आमंत्रित करना चाहते हैं तो उनका सम्पर्क सूत्र मिल पाना कठिन हो जाता है, अतः ऐसी और ऐसी अनेक जानकारियाँ, जिसकी सब आर्यजनों को एवं अन्य महानुभावों को बहुत आवश्यकता रहती है को फोन पर ही उपलब्ध करवाये जाने के लिए इस योजना का शुभारम्भ किया गया है। **जिसमें एक ही नम्बर पूरे भारत व विश्व के लिए होगा जहाँ आप अपने मोबाईल अथवा लैण्डलाईन से 011-23488888 डायल करके आप अपने आपेक्षित जानकारी ले सकेंगे।** आवश्यकता इस बात की है कि आप अपनी संस्था की पूर्ण जानकारी जल्द से जल्द एक फार्म में भरकर भेजें। यह महत्वपूर्ण योजना आर्यसमाज के आपसी सम्पर्क के लिए अत्यन्त कारगर सिद्ध होगी। सिस्टम चालु हैं किन्तु जानकारिया अभी बहुत कम हैं। अतः अपणा रिकार्ड जल्द से जल्द भेंजे। जिससे पूर्ण जानकारिया उपलब्ध कराई जा सके।

-: पृष्ठ 1 :-

सेवा में,
संयोजक
विश्वमार्यम् प्रोजेक्ट समिति
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

महोदय,

अपकी सेवा में हमारी आर्य समाज का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

कृपया इस जानकारी का आवश्यकतानुसार उपयोग करें। यह विवरण हमारी सर्वश्रेष्ठ जानकारी में सत्य है। भविष्य में इसमें परिवर्तन होने पर हम आपको तुरन्त सूचित करेंगे।

सामान्य विवरण

आर्य समाज का नाम* : .....

स्थानीय क्षेत्र * :.....

पूरा डाक पता * :.....

.....

.....

राज्य *.....

पिनकोड* .....

थल चिह्न (लैंडमार्क) : .....

क्षेत्रीय एस.टी.डी.कोड* :.....

दूरभाष * .....

ई–मेल : .....

वेबसाइट : .....

सम्पर्क व्यक्ति : .....

आई.वी.आर.एस.में देने के लिए दूरभाष* :.....

आधिकारिक विवरण

कार्यालय समय प्रातः .....से सायं :.....

प्रधान :.....

मंत्री : .....

-: पृष्ठ 2 :-

कोषाध्यक्ष : .....

पुस्तकालयाध्यक्ष : .....

अधिष्ठाता आर्य वीरदल :.....

पुरोहित :.....

अन्य विवरण, सही पर ( ) का निशान लगाएँ

पत्रिका ( ) **हाँ** ( ) **नहीं** **संपादक** .....

पत्रिका शीर्षक .....

कम्प्यूटर ( ) हाँ ( ) नहीं **इंटरनेट** ( ) हाँ ( ) नहीं

दैनिक यज्ञ एवं सत्संग प्रातः ( ) हाँ ( ) नहीं **समय** .....

दैनिक यज्ञ एवं सत्संग सायं: ( ) हाँ ( ) नहीं **समय** .....

साप्ताहिक यज्ञ एवं सत्संग ( ) हाँ ( ) नहीं दिन **समय**.....

महिला यज्ञ एवं सत्संग ( ) हाँ ( ) नहीं दिन **समय** .....

आर्य वीरदल शाखा ( ) हाँ ( ) नहीं **समय** .....

सेवाएँ सुविधाएँ

वैदिक पुस्तकालय : ( ) हाँ ( ) नहीं **पुस्तकों की संख्या** .....

चिकित्सा सेवाएँ : ( ) अस्पताल ( ) पैथोलोजी लैब
( ) फिजिओथैरेपी ( ) एक्बुलेंस

आयुर्वेदिक औषाधालय : ( ) ( ) एलोपैथिक औषधालय
( ) होम्योपैथिक औषधालय

शैक्षणिक सेवाएं : ( ) गुरुकुल ( ) स्कूल
( ) वोकेशनल सेंटर ( ) ट्यूशन सेंटर ( ) साक्षारता केंद्र

आश्रम : ( ) वानप्रस्थ आश्रम ( ) संन्यास आश्रम
: ( ) अनाथ आश्रम ( ) वृद्ध आश्रम
( ) महिला आश्रम ( )विक्लांग आश्रम

संस्कार सुविधाएँ : ( ) पुरोहित ( ) विवाह संस्कार ( ) अन्य संस्कार

अन्य सुविधाएँ : ( ) हॉल किराये पर ( ) कमरे किराये पर

दिनांक : * **हस्ताक्षर** * **हस्ताक्षर** **हस्ताक्षर**

..... प्रधान मन्त्री कोषाध्यक्ष

नोट : जिस देय जानकारी के अन्तर्गत उक्त स्टार चिन्ह लगा है उसके सामने दी जाने वाली जानकारी को अवश्य ही भरा जाना चाहिये, अन्यथा प्रस्तुत जानकारी अधूरी मानी जायेगी।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

25 फरवरी, 2013 से 3 मार्च, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28 फरवरी / 1 मार्च –2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 फरवरी, 2013

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

नागालैण्ड वेद सम्मेलन स्थगित

नागालैण्ड में दिनांक 15, 16 व 17 मार्च2013 को आयोजित होने वाला वेद सम्मेलन किन्हीं कारणों से स्थगित कर दिया गया है। आयोजन की नई तिथियाँ आर्य सन्देश में प्रकाशित की जाएगी। आपको हुई असुविधा के लिये खेद है।

– विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली सभा

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल वटुक विकास केन्द्र अलियाबाद, मण्डल. शामीरपेट, जिला– रंगारेड्डी, (आन्ध्र–प्रदेश) में नवीन सत्र 2013–14 के लिए 1 अप्रैल 2013 से प्रथम कक्षा से पाँचवी कक्षा तक प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है । प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी की आयु 5 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। पाठक्रम केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई) का होगा । दिनचर्या गुरुकुलीय होगी। शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आसन, प्राणायाम, व्यायाम, चिकित्सा आदि की व्यवस्था होगी। अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए गुरुकुल में प्रवेश हेतु अभिभावक यथाशीघ्र सम्पर्क करें

– आचार्य भवभूति आर्य 09312569169 , 09390792645

आर्य वर की आवश्यकता

आर्य विचारों से ओत प्रोत जन्म मई, 1983/ 5'5''/एम.ए. अर्थशास्त्र, एम.एड. नेट पास, उच्चस्तरीय कम्प्यूटर एवं फैशन डिजाईनिंग डिप्लोमा युक्त, वर्तमान में पी.जी.टी. के रूप में कार्यरत एवं पी. एच.डी. कर रही, गौरवर्णीय,स्लिम कन्या हेतु समकक्ष योग्यता युक्त, स्वावलम्बी, पूर्णतयः निर्व्यसनी एवं शाकाहारी आर्य वर की आवश्यकता है। सम्पर्क सूत्र :– 09425488861, 09806684799 ई–मेल– lssrana@ rediffmail.com

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित छह सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/–रु. सैकड़ा	मात्र 300/–रु. सैकड़ा

ब्रेल लिपि में महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/–रु.

आर्यजन अपनी आर्य समाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्त स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर